२००७-२००८
उत्तरमध्यमा परीक्षा
प्रथम खण्ड, द्वितीय अधिसत्र
विषय- खवर्ग संस्कृत, षष्ठ प्रश्न पत्र

समय- ३½ घण्टा | सम्पूर्णांक-५०

प्रश्न.१ किन्हीं आठ प्रश्नों का उत्तर दीजिए। खण्ड 'क' से चार तथा खण्ड 'ख' से चार प्रश्नों का समाधान अनिवार्य है। 4+4=8

(क)
(१) संसार में किसका जन्म लेना सार्थक है?
(२) धीरपुरुष के लक्षण लिखिए।
(३) 'विद्या गुरूणां गुरुः' का भाव लिखिए
(४) 'मूर्खस्य नास्त्यौषधम्' का हिन्दी रूपान्तर कीजिए।
(५) 'न खलु वयस्तेजसाम् हेतुः' का हिन्दी शब्दानुवाद कीजिए।
(६) 'न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः का अर्थ लिखिए।

(ख)
(१) 'प्रतिभा' को परिभाषित कीजिए।
(२) जयदेव के अनुसार काव्य हेतुओं के नाम लिखिए।
(३) 'रूढ' के भेदों के नाम लिखिए।
(४) 'वाक्यकदम्बक' का अर्थ लिखिए।
(५) 'योगरूढ' को स्पष्ट कीजिए।
(६) यौगिक को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न.२ किन्हीं चार प्रश्नों का समाधान कीजिए। 'अ' भाग से दो एवं 'ब' भाग से दो का समाधान अनिवार्य है। 4x5=20

(अ)
(१) 'नीतिशतकम्' के रचनाकार का साहित्यिक परिचय दीजिए।
(२) 'नीतिशतकम्' के आधार पर परोपकारिता अथवा उद्योग के महत्व को स्पष्ट कीजिए।
(३) वर्तमान परिवेश में 'नीतिशतकम्' की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

(ब) (१) 'चन्द्रालोक' प्रथम मयूख के प्रतिपाद्य को संक्षेप में लिखिए।
(२) शब्द शक्ति पर टिप्पणी लिखिए।
(३) महाकवि जयदेव का इतिवृत्त लिखिए।

प्रश्न.३ किन्हीं **चार** श्लोकों का भावार्थ लिखिए। प्रत्येक खण्ड से **दो-दो** श्लोकों का भावार्थ लिखना अनिवार्य है। 6+6=12

(क) अ. एको देव: केशवो वा शिवो वा, ह्येकं मित्रं भूपतिर्वा पतिर्वा।
एको वास: पत्तने वा वने वा, एका नारी सुन्दरी वा दरीवा।।

ब. श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन,
दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन

विभाति काय: करुणापराणां,
परोपकारैर्न तु चन्दनेन।।

स. विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम:।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

(ख) अ. प्रतिभैव श्रुताभ्याससहिता कवितां प्रति।
हेतु: मृदम्बुसम्बद्धा बीजमाला लतामिव।।

ब. अङ्गी करोति य: काव्यं शब्दार्थावनलंकृती।
असौ न मन्यते कस्मादनुष्णामनलंकृती।।

स. शुद्धतन्मूलसंभिन्नप्रभेदैर्यौगिकस्त्रिधा।
ते च भ्रान्तिस्फुरत्कान्तिकौन्तेयादिस्वरूपिण:।।

प्रश्न.४ निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर संस्कृत में लेख लिखिए। 10

(क) नास्ति उद्यमसम: बन्धु:।
(ख) वाराणसी।
(ग) परोपकार:।
(घ) सत्संगति:।
(ङ.) पर्यावरणम्।